P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-III*November-2014
E: ISSN NO.: 2349 – 980X

बेसिक शिक्षा : कौशल विकास की पृष्ठभूमि

हरीश कुमार पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षक शिक्षा विभाग,
बसुन्धरा टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर, बिहार।

नागेन्द्र झा
विभागाध्यक्ष,
बसुन्धरा टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर, बिहार।

सारांश

"निःसंदेह भारत के लिए वह स्वर्णिम दिन होता अगर महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों की दार्शनिकता को समय रहते लागू कर दिया गया होता तो आज भारत स्किल्ड शरत, विनिर्माण (मैनुफैक्चरर) शरत, कृषि सम्पन्न भारत होता तथा आज सम्पूर्ण विश्व को श्रेष्ठ मानवता के आदर्ष को स्थापित करते हुए पुनः विश्वगुरू के पद को सुषोभित कर रहा होता। खुद को बदलने या नया सीखने में एक किस्म का डर छिपा रहता है यह डर परफेक्शन का होता है। असल में बदलने के लिए हमें कुछ छोड़ना पड़ता है, कुछ जोड़ना पडता है, कुछ सीखना पड़ता है सो किसी बदलाव के लिए एक कदम तो बढ़ाना ही होता है।"

मुख्य शब्द : कौशल विकास, भाषा, शिक्षा, नवाचार।

प्रस्तावना

युग परिवर्तन के निमित्त जब धरा तप करती है तथा मानव के त्रास को हरण करने के लिए जब श्रेष्ठ आत्मा का आह्वान करती है तब कहीं वसुंधरा पर ऐसे महामानव का जन्म होता है जो सत्य, अहिंसा, प्रेम, सत्याग्रह, मानव–सेवा, निर्भयता, आत्मानुशासन के गुणों को धारण कर पुनः धरा पर राम राज्य की संकल्पना को साकार रूप में स्थापित करता है युग उसी को महात्मा के रूप में अलंकृत कर राष्ट्रपिता के पद से सुशोभित करती है। निश्चित रूप से भारत का वह स्वर्णिम दिन रहा होगा जब गुजरात प्रांत के पोरबंदर नामक स्थान पर माता पुतली बाई पिता करम चंद गाँधी के ऑगन में युग दृष्टा, युग पुरूष ने 02 अक्टूबर 1869 को अपने कुल सहित पूरे राष्ट्र के उद्धार का संकल्प लेकर जन्म लिया तथा पूरे विश्व को सत्य अहिंसा तथा मानवता का संदेश दिया जिसे आज हम मोहनदास करमचंद गाँधी (बापू) के नाम से जानते हैं। महात्मा गाँधी ने भारत की अशिक्षा, बेरोजगारी, भूख, ऊँच–नीच, नस्ल–भेद, समाजिक कुरीतियों, अंध–विश्वास जैसे अनेक अभिशापों को बड़े करीब से महसूस किया था। गुलाम भारत की दुर्दशा, शोषण, भूखमरी को करीब से देखा था। बापू ने भारत माता को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने के लिए तथा भारत को सशक्त बनाने के लिए जिस रास्ते का सहारा लिया उस समय कल्पना भी नहीं की जा सकती कि कभी सूरज अस्त नहीं होने वाला देश बिना किसी हिंसा के पूर्ण स्वराज्य प्राप्त कर सम्पूर्ण भारतवासियों को खुली हवा में सांस लेने का सुअवसर ही नहीं दिया बल्कि हमें अपनी अभिव्यक्ति स्वतंत्र रूप से करने का वरदान भी प्राप्त कराया। अन्यथा आज जिस राष्ट्र ने महात्मा गाँधी को राष्ट्रपिता से सम्मानित किया है आज उसी के बारे में कुछ भी अशोभनीय बात करना, मानो राष्ट्र को अपमानित करना है।

महात्मा गाँधी एक युग दृष्टा

महात्मा गाँधी का सम्पूर्ण जीवन ही दर्शन है। इस दर्शन के सहारे सम्पूर्ण विश्व का भाग्य सम्बद्ध है। विचारधारा के रूप में गाँधी जी ने संतप्त समाज को नयी दिशा दी है जिसमें अहिंसात्मक सृजन की आकांक्षा है। गॉधीवाद कोरा राजनीतिक सिद्धांत नहीं है। यह जनमानस को एक संदेश भी है वह जीवन दर्शन है। वर्तमान युग के जीवन में ही मूल्यांकन की कसौटी है। महात्मा गाधी के विचारों को व्यावहारिक रूप प्रदान करने के संबंध में रवीन्द्र नाथ टैगोर कहते हैं कि "यदि गाँधी जी समाज के लिए किसी प्रयोग का प्रस्ताव करते हैं तो वे पहले स्वयं उसकी अग्नि–परीक्षा में से गुजरते हैं उसका मूल्य पहले स्वयं चुकाते हैं। वे दूसरों से माँग करने से पूर्व अपना सर्वस्व त्याग देते हैं।" रवीन्द्र नाथ टैगोर के महात्मा गाँधी के संदर्भ में यह कथन सिद्ध करती है कि महात्मा गाँधी पहले अपने विचारों को व्यवहार की कसौटी पर कस कर ही कोई बात जनमानस के बीच रखते हैं। समकालीन परिस्थतियों का महात्मा गाँधी जी को इतनी सटिक जानकारी थी तथा आने वाले कल के बारे में उनकी सोच इतनी श्रेष्ठ रही कि आइन्स्टीन के ये उद्‌गार समीचीन प्रतीत

होते हैं कि आने वाली पीढ़ियां शायद मुश्किल से ही विश्वास करेगी कि गाँधी जैसा हाड़–मांस का पुतला कभी इस भूमि पर पैदा हुआ होगा। गाँधी इंसानों में एक चमत्कार था। उन्होंने अपने जीवन काल में जो महसूस किया, भारत की जो तस्वीर देखी, विदेशों की आधुनिकता देखी, भारत की विभिन्न पीड़ाओं से कराह रही जनता के दर्द को महसूस किया तथा विभिन्न सामयिक मुद्दों पर यथा जाति प्रथा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रयोग, ट्रस्टीशिप का सिद्धांत, अंर्तजातीय विवाह, किसान–जमींदार सम्बन्ध, समाजवाद, सर्वोदय, संसदीय व्यवस्था, हिंसा, मातृ–भाषा, शिक्षा, लोकतन्त्र, एकता, अन्तर्राष्ट्रीय भावना, महिला सशक्तिकरण इत्यादि अनेकानेक मुद्दों पर अपनी बात रखी।

महात्मा गाँधी ने पूरी शिक्षा की समग्रता को इतनी सुंदर व्यवस्था देने का सर्वप्रथम प्रयास किया। महात्मा गाँधी ने अपने सम्पूर्ण जीवन काल के अनुभवों तथा भारत की आत्मा को समझने वाले तथा भारत की विकास की सम्पूर्ण व्यवस्था की नब्ज को महात्मा गाँधी ने अपने अनुभविक ज्ञान से एक ऐसी सक्षम शिक्षा व्यवस्था देने का सफल प्रयास 1937 में वर्धा नामक स्थान पर मारवाड़ी सोसायटी के तत्वाधान में रजत जयंती के अवसर पर अपने अध्यक्षीय भाषण एवं 'हरिजन' नामक पत्रिका में प्रकाशित लेख के माध्यम से जिसे हम नयी तालिम, बुनियादी शिक्षा, वर्धा शिक्षा, बेसिक शिक्षा के नाम से जानते हैं के माध्यम से अपने मौलिक शैक्षिक विचार प्रस्तुत किये जिसमें :–

1. 1 से 14 वर्ष के बच्चों को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा
2. शिक्षा का माध्यम मातृ भाषा
3. सम्पूर्ण शिक्षा को किसी शिल्प (क्राफ्ट) से जोड़ना।
4. स्वावलम्बी शिक्षा

महात्मा गाँधी ने जो शैक्षिक विचार दिये वो भारत की तात्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप एक बहुत ही अच्छी शिक्षा व्यवस्था थी। क्योंकि उस समय भारत गुलाम था। अंग्रेजी शासन सम्पूर्ण भारतीयों की शिक्षा के पक्षधर नहीं थी, भारत में व्याप्त भेद–भाव, असमानता, अशिक्षा, बेरोजगारी, भूखमरी इतनी भयावह स्थिति में थी कि भारतीयों के लिए वही शिक्षा कारगर होगी जो भारत से व्याप्त उपरोक्त बातों को मिटा कर समता स्थापित कर सके। इसलिए महात्मा गाँधी ने तात्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखकर जो शैक्षिक योजना प्रस्तुत की वह समय रहते सही तरीके से लागू नहीं हो पायी तथा 1947 में जब भारत स्वतंत्र हुआ तथा जो शिक्षा आयोग बनी तब वर्तमान सरकार ने प्राथमिक शिक्षा को दरकिनार कर उच्च शिक्षा पर अपना ध्यान विशेष रूप से प्रकट किया जबकि देश की वर्तमान जरूरत प्राथमिक शिक्षा को जनमानस से दूर होती चली गयी। महात्मा गाँधी के विचार भारतीय परिपेक्ष्य में थी। भारत की जरूरतों को ध्यान में रख कर दिये थे। महात्मा गाँधी भारत को पूर्ण देखना चाहते थे। भारत की आर्थिक निर्भरता को सक्षम बनाना चाहते थे। गाँधी जी ने भारत की वास्तविकता को देखे थे, गरीबी देखी थी, अशिक्षा देखी थी, जातिगत भेदभाव देखे थे, सामाजिक विपन्नता देखी थी, बेमेल जोड़ियां देखी थी, आजाद भारत की सुबह की किरण को लालायित ऑखे देखी थी, इन सब को ध्यान में रख कर महात्मा गाँधी नयी तालिम नामक शिक्षा योजना प्रस्तुत की थी। अगर महात्मा गाँधी के विचारों को उसी समय पूर्ण रूप से लागू कर लिया गया होता तो आज भारत की तकदीर और तस्वीर कुछ दूसरी होती। आज गाँधी जी के विचारों को वर्तमान सरकार मान्नीय नरेन्द्र मोदी जी ने बराबर समझा है। गाँधी जी ने शिक्षा को शिल्प, किसी कौशल से जोड़ने की बात कही थी तथा आज की भारतीय सरकार ने 2014 में उसी कौशल की बात ऐतिहासिक लालकिला की प्राचीर से दुहरायी है। गाँधी जी जानते थे यदि भारत के लोगों को आत्मनिर्भर तथा सक्षम बनाना है तो उन्हें किसी शिल्प कारीगरी दस्तकारी से जोड़ना होगा तभी भारत उत्पादन के क्षेत्र में प्रगति कर सकेगा।

आज वैष्विक परिदृश्य में भारत ही एक ऐसा राष्ट्र है जहाँ सम्पूर्ण विश्व अपनी नजरे गड़ाये बैठा है क्योंकि भारत युवाओं का देश, तकनीकी शिक्षा में उभरता देश, भौतिकता में अपनी अध्यात्मिकता को तराशता देश, कम्प्यूटर जगत का सिरमौर देश, अपनी प्रतिभा के दम पर कालांतर से ही विश्व के अग्रणी देशों के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाला देश, प्राकृतिक सुष्मा में विश्वास करने वाला देश, सबको गले लगाने वाला देश, वसुधैव कुटुम्बकम सहित सर्वे भवन्तुः सुखिनः .....के गीत को गुनगुनाने वाला यह देश जगत गुरू के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त देश है। महात्मा गाँधी ने उन सभी विचारों को अपने मन की व्यथा को सुन्दर शब्दों में श्मेरे सपनों का भारतवर्ष नामक शीर्षक में लिखा है कि, "मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूँगा जिसमें गरीब लोग भी यह महसूस करेंगे कि यह उनका देश है। जिसके निर्माण में उनकी आवाज का महत्व है। मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूँगा जिसमें उच्च एवं निम्न वर्गों का भेद नहीं होगा। जिसमें विभिन्न सम्प्रदायों में पूरा मेल–जोल होगा। मैं ऐसे भारत में अस्पृश्यता या शराब और दूसरी नशीली चीजों के अभिशाप के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता। उसमें स्त्रियों को वही अधिकार होंगे जो पुरूषों को होंगे शेष सारी दुनिया के साथ हमारा संबंध शांति का होगा। यह है मेरे सपनों का भारत।"

अगर इरादे फौलादी हो और सही मार्गदर्शन मिले तो विपरीत हालात में भी सफलता का मुकाम हासिल किया जा सकता है। यह विदित् है कि देश की आर्थिक हालात ऐसे नहीं थे कि महात्मा गाँधी के विचारों को वर्तमान सरकार लागू कर सके तथा कुछ मायनों में भी सही लागू किया गया होता तो वर्तमान समय की विसंगतियाँ, अव्यवस्थाओं तथा भ्रष्टाचार पर अंकुश तो लग ही सकता था। परंतु अदूर्दषिता तथा दृढ इच्छा शक्ति की घोर कमी ने एक ऐसी शिक्षा योजना को हासिये पर खड़ा कर दिया जो भारत की दिशा और दशा दोनों को तय करने वाली थी। आज हम जिस शिक्षा व्यवस्था की प्रस्तावना 2000 में रखकर 2002 में लागू कर रहे हैं तथा 2015 में भी वही समस्या (प्राथमिक शिक्षा सार्वभौमिकरण, ड्रॉप आउट, अपव्यय–अवरोधन तथा भाषा संबंधी समस्या, अनट्रेंड, जो ट्रेंड हैं उनमें कौशल की कमी) आज भी बरकार है जबकि महात्मा गाँधी ने 1937 में हरिजन पत्रिका तथा वर्धा सम्मेलन में जो बातें कहीं थी उसमें प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा का माध्यम कौशल विकास (शिल्प) तथा स्वावलंबन ही तो था जो 2014–15 की नई सरकार इस बात पर विशेष बल दे रही है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था उन कौशलों को विकसित करने में सक्षम नहीं है। अब प्रश्न उठता है कि आजादी के छः दशक बाद भी जो सरकारें

आयी, जो शिक्षा नीति बनी जो आयोग बैठाये गये जिन बिन्दुओं पर सुझाव माँगा गया, सरकार की स्वायत्सासी संस्थाएँ आखिर क्या करती रही जो कि वर्तमान सरकार की ये नैतिक जिम्मेदारी थी कि शिक्षा जैसे संवेदनशील मुद्दे को जिनके कंधों पर देश के नवनिर्माण की जिम्मेवारी डाली जाने वाली है जबकि इस बात को कोठारी कमीशन ने 1964–66 में ही कहा था कि भारत के भविष्य का निर्माण उनकी भावी कक्षाओं में हो रहा है, जबकि इस बात से नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है कि 1964–66 में बनी कमीशन पर ही आगे की सभी शिक्षा नीतियॉ कहीं न कहीं कोठारी कमीशन की ही बातों को थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ अपनी संस्तुतियॉ दी। जबकि होना यह चाहिए था कि बदलते समय में सम्पूर्ण विश्व को ध्यान में रखते हुए वर्तमान परिस्थिति का अवलोकन करते हुए आने वाले कल का निर्माण किया जाए या कैसे हो? पर बल देना चाहिए जो कि वर्तमान सरकार की दृढ इच्छाशक्ति की कमी अदूरदर्शी सोच, वैज्ञानिक सोच का आभाव ही था कि शिक्षा में तकनीकि का समावेश न करके तथा शिक्षा पर अल्पव्यय जैसी बातों को समावेश करके कुछ हद तक वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को पूर्ण एवं प्रभावी बनाया जा सकता था। जबकि अनेक सरकारें उसी महात्मा गाँधी के नाम तथा विचारों की दुहायी दे कर आयी तथा उसी शिक्षा व्यवस्था को 1965 में ही करीब करीब हासिये से बाहर कर उस शिक्षा व्यवस्था को लागू की जो मैकाले तथा फ्रायड के शिक्षा एवं मनोविज्ञान पर आधारित थी। भारत का तब–तक विकास नहीं हो सकता जब–तक भारत की सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था भारतीय पृष्ठभूमि में न बनी हो तथा उसका संचालन जो विचारों से पूर्ण रूप से सनातन भारतीय हो क्योंकि भारत ज्ञान की गुरूस्थली रही है। भारत के ऋषि मनिषी, तपस्वी, चिंतन–मनन की उस पराकाष्ठा को बड़े–बड़े वैज्ञानिक अनुष्ठानों द्वारा उस ज्ञान ग्रंथ को दिये जिसे आज सम्पूर्ण विश्व उस वेद–ग्रंथ को ज्ञान की क्रमबद्ध व्यवस्था को मानता है। उस ज्ञान का प्रमाण नालंदा जैसे कई विश्वविद्यालय हैं जहॉ विश्व के कई देशों के लोग आकर अध्ययन करके अनुवाद करके उस अप्रतीम ज्ञान को ले गये तथा अपनी सभ्यता की सुरूआत की जबकि भारत की सनातन संस्कृति सदियों पुरानी जिस सभ्यता को उन्नत की सदियों बाद वह सभ्यता अब विश्व अपनाने के लिए भारतीय ज्ञान को जानने का प्रयास कर रहा है और हम लोग उसी मैकाले की शिक्षा व्यवस्था को पकड़े बैठे हैं जिस शिक्षा व्यवस्था ने भारतीय रूप रंग होते हुए भी तन और मन से मैकाले बना दिया।

2 सितम्बर 1921 को हिन्दी जन जीवन में अपने विचार ब्यक्त करते हुए गाँधी जी मातृभाषा के पक्ष में लिखा था, अगर हमारे हाथ में तानाशाही सत्ता हो, तो मैं आज से ही विदेशी माध्यम के जरिए दी जाने वाली अपने लड़कों और लड़कियों की शिक्षा बन्द कर दूँ। मैं पाठ्यपुस्तकों की तैयारी का इंतजार नहीं करूँगा। वे तो माध्यम परिवर्तन के पीछे–पीछे चली आएंगी। यह एक ऐसी बुराई है जिसका तुरत इलाज होना चाहिए। उनका कहना था, मैं पाश्चात्य संस्कृति का विरोधी नहीं हूँ। मैं अपने घर के खिड़की दरवाजों को खुला रखना चाहता हूँ जिससे बाहर की स्वच्छ हवा आ सके। लेकिन विदेशी भाषाओं की ऐसी आँधी न आ जाये कि मैं औंधे मुँह गिर पड़ूँ। भारतीय अँग्रेजी ही क्यों अन्य भाषाएँ भी पढे परन्तु जापान की तरह उनका उपयोग स्वदेश हित में किया जाए। उन्होंने अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी प्रचार की व्यापक योजना बनाई। उन्होंने वर्ष 1935 में इस कार्य का निरीक्षण करने और आवश्यक सुधार सुझाने के लिए काका कालेलकर को दक्षिण भारत भेजते समय कहा था – काका साहब, हिन्दी प्रदेशों में हिन्दी प्रचार के लिए हरगिज नहीं जाना, विशेषकर उत्तर प्रदेश में। हिन्दीतर प्रदेशों में हिन्दी प्रचार के लिए मेरा आशीर्वाद आपके साथ है। दक्षिण में जाओ और वहाँ कार्य करो। हिन्दी स्वराज में उन्होंने राष्ट्रभाषा की समस्या पर लिखा, हरेक पढे–लिखे हिन्दुस्तानी को अपनी भाषा का, हिन्दू को संस्कृति का, मुस्लमान को अरबी का, परसी को पर्शियन का और सबको हिन्दी का ज्ञान होना चाहिए। कुछ हिन्दुओं को अरबी और कुछ मुसलमानों और पारसियों को संस्कृत सीखनी चाहिए। सारे हिन्दुस्तान के लिए तो हिन्दी ही होनी चाहिए।

जिसे हम तुच्छ समझने की भूल कर बैठते हैं वही एक दिन मील का पत्थर साबित होता है। भारत सदियों से यही भूल करता रहा और विदेशी आतातायी इसी बात का लाभ उठा कर भारत को तो गुलाम किये ही भारत के मानसिकता पर जो आघात हुआ उसी का परिणाम भारत सदियों तक झेलता रहा। यद्यपि विशम परिस्थितियों में भी भारत ने अपनी महिमा को बचाये रखने के लिए समय–समय पर युग दृष्टाओं को भेज कर नवीन ऊर्जा के साथ भारत माता की गौरवमयी महिमा को महिमामंडित करने का प्रयास करती रही है। नवाचार का उदाहरण शिक्षा तथा सोषल मीडिया के माध्यम से ही पहुँचता है। बडी विडम्बना है कि महात्मा गाँधी पर जो विचार शैक्षिक जगत को करना चाहिए वह विचार इलेक्ट्रोनिक्स मीडिया इतनी प्रभावी ढंग से करती है या कोशिश करती है कि आने वाले समय में टीचिंग मेथड्स का कार्य मीडिया ही करेगी क्योंकि राजीव गाँधी के प्रधानमंत्रित्व काल में कम्प्यूटर शिक्षा पर जो विचार का विरोध हुआ था वह बदलते समय में उसी तरह हावी होने वाला लगता है जैसे मैकाले की शिक्षा व्यवस्था।

महात्मा गाँधी भी दक्षिण अफ्रीका से भारत वापसी के एक सदी होने के मौके पर आकाशवाणी ने अपने FM Radio Network पर 100 एपिसोड की सीरीज का प्रसारण करने जा रहा है। शोध आधारित इस सीरीज का मकसद 1915 में दक्षिण अफ्रीका से गाँधीजी की भारत वापसी के समय को याद कराता है।

दक्षिण भारतीय मूल की दिल्ली के स्कूल में पढने वाली 16 वर्षीया छात्रा विस्मन पिउ ने धान के पुआल और धान से निकली भूसी से मिश्रित "वुड बोर्ड" बनाने का जो नायाब नमुना पेश किया है वह इसी Craft Education के ही एक अंग को दर्शाता है।

छुट्टी के समय का सदुपयोग और Excursion दर्शाने का इससे अच्छा क्या उदाहरण हो सकता है। 'Social Ennovation Real Initiative' एक Social Desk के माध्यम से जो ये आधार उपलब्ध कराता है यह अच्छा उदाहरण 'Ennovation in education' का हो सकता है जो Creative Education का एक नमूना है।

निष्कर्ष

आज का युवा उम्मीदों का दामन पकड़े बैठा है न जाने कब कहाँ से कोई अवसर निकल आये, जबकि इस

अवसर की तलाश में वह अपनी उम्र की दहलीज पार कर चुका होता है। किसी भी राष्ट्र के निर्माण में युवा वर्ग की अद्वितीय भूमिका को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। जिस नारे के सहारे आज राजनितिक पैमाने तराशे जाते हैं गाँधी जी ने उसे कितनी पवित्रता से राष्ट्र को उस मुकाम में खड़ा किया कि सम्पूर्ण विश्व आज महात्मा के विचारों को अपना कर आज भी गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। वास्तव में महात्मा गाँधी को अभी तक सम्पूर्ण नहीं समझा गया है महात्मा को सम्पूर्ण समझना उस परम सत्य के समीप पहुँचना है जो प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा की पुकार है। जब–जब विश्व में मानवता विरोहित होगी, जब विश्व अशांति से गुजर रहा होगा, जहॉ सत्य पंगु होता नजर आयेगा, जहां हिंसा सर्वोपरी हो जायेगी, जहाँ भेद–भाव परवान चढेगा, जहाँ बच्चे घुटन महसूस करेंगे, जहाँ राष्ट्र की प्रगति मन्द पर जायगी, जहाँ एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर प्रभाव जमाएगा वहॉ सिर्फ एक ही विचार, एक ही उम्मीद की किरण होगी वह सिर्फ महात्मा गांधी के विचार। यहाँ महात्मा गांधी कोई व्यक्ति नहीं वरन भारतीय चिन्तन मनन की वह परंपरा विचार–धारा है जहाँ उसके जीवन का प्रत्येक क्षण, प्रत्येक कार्य, प्रत्येक व्यवहार इनका उत्कृष्ट कोटि का है कि उसका जीवन ही जीवन दर्शन है तथा सम्पूर्ण जीवन दर्शन ही शिक्षा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. महात्मा गाँधी, मेरे सपनों का भारत
2. महात्मा गाँधी, सत्य के प्रयोग
3. राधा कृष्णन सर्वपल्ली, गाँधी जी का धर्म और राजनीति
4. टैगोर रवीन्द्र नाथ, सभ्यता और प्रगति
5. गाँधी, मोहनदास करमचंद ऑटो बायोग्राफी, नवजीवन पब्लिसिंग हाऊस, अहमदाबाद 1940
6. गाँधी अभिनंदन ग्रंथ, साहित्य मंडल 1971
7. सिंह रामजी गांधी दर्शन मीमांसा, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना 1973
8. गुप्ता एस. पी., भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याऍं, शारदा प्रकाशन इलाहाबाद 2005
9. कुरूक्षेत्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय नई दिल्ली 2005
10. कुरूक्षेत्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय नई दिल्ली 2007
11. कुरूक्षेत्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय नई दिल्ली 2009
12. उ.प्र.रा.ट.मु.वि.वि., शिक्षा के दार्शनिक आधार, इलाहाबाद उ.प्र. 2009
13. एन.सी.ई.आर.टी., भारतीय आधुनिक शिक्षा, नई दिल्ली 2009
14. एन.सी.ई.आर.टी., भारतीय आधुनिक शिक्षा, नई दिल्ली 2010
15. मालवीय राजीव, शिक्षा के सिद्धांत शारदा प्रकाशन इलाहाबाद 2010
16. कुरूक्षेत्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय नई दिल्ली 2010
17. अग्रवाल जे.सी.–गुप्ता एस. उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक शिप्रा पब्लिकेशन 2010
18. एन.सी.ई.आर.टी., भारतीय आधुनिक शिक्षा, नई दिल्ली 2011
19. प्रतियोगिता दर्पण, मेरे सपनों का भारत महात्मा गाँधी, अक्टूबर 2011
20. कुरूक्षेत्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय नई दिल्ली 2011
21. पाण्डेय रामशकल शिक्षा दर्शन अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा 2011
22. कुरूक्षेत्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय नई दिल्ली 2012
23. गुप्ता रेणु, शिक्षा के सिद्धांत, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा 2012
24. गर्ग सुषमा, भारतीय राजनीतिक चिंतन, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा 2012
25. त्यागी गुरसरन दास शिक्षा के आधुनिक समान्य सिद्धांत अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा 2014